बाल साहित्य
दशा एवं दिशा

बाल साहित्य
दशा एवं दिशा

संपादक

सुरेन्द्र कुमार

सहायक आचार्य (हिन्दी)

राजकीय शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय

साबूआना (हनुमानगढ) राज.

सह–संपादक

डॉ. प्रीति दुबे

सहायक आचार्य (हिन्दी)

राजकीय कन्या महाविद्यालय

अटरू (बारां) राज.

2023

सिद्धि विनायक पब्लिकेशन्स

प्रकाशक

सिद्धि विनायक पब्लिकेशन्स
कुलचन्द्र, हनुमानगढ (राज) 335526
94611-09470, 83063-09470
publicationssiddhivinayak@gmail.com

ISBN : 978-81-965118-0-7

© सिद्धि विनायक पब्लिकेशन्स

प्रथम संस्करण (2023)

मूल्य : ₹ 1000.00

शब्द संयोजक एवं डिजाइन : कमल जीत सिंह (तकनीकी सहायक)

मुद्रक : जैन ऑफसैट प्रिण्टर्स, संगरिया

वैधानिक चेतावनी

- शोध आलेख/चैप्टर/अध्याय में दिए गए विचार लेखकों/शोधकर्त्ताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए प्रकाशक/संपादक/सह–संपादक जिम्मेदार नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र हनुमानगढ, राजस्थान होगा।
- इस पुस्तक का प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना पुनः प्रकाशन/फोटो कॉपी/स्कैन इत्यादि माध्यमों से पुनर्मुद्रण करना कॉपीराइट अधिनियम के अनुसार दंडनीय अपराध है।

S.N.	शीर्षक –लेखक	Pages
	भूमिका	(vii) – (viii)
1	समकालीन हिंदी बाल साहित्य में युग चेतना –सुरेन्द्र कुमार	1 – 7
2	बाल साहित्य : वर्तमान के बदलते परिप्रेक्ष्य में –डॉ. प्रीति दुबे	8 – 13
3	दीनदयाल शर्मा के बाल नाट्य–साहित्य में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना –डॉ. गुरमीत सिंह	14 – 19
4	सूर साहित्य में बाल मनोविज्ञान –रीतू रानी	20 – 23
5	इक्कीसवीं सदी का बाल साहित्य –डॉ. संजीव कुमार शर्मा	24 – 28
6	बाल साहित्य की उपयोगिता और महत्त्व –मुमताज परवीन	29 – 33
7	नैतिक विकास में बाल साहित्य की भूमिका –सोनू बाड़ा, डॉ. संगीता चौहान	34 – 38
8	नैतिक मूल्यों का संवर्धन एवं पंचतंत्र की कहानियाँ –डॉ. राजेश, डॉ. आशा कुमारी	39 – 49
9	बाल साहित्य में युग चेतना –लोभान वर्मा	50 – 54
10	बचपन : कल्पनाओं व आशाओं का पारावार –पवन कुमार मीना	55 – 67
11	बाल पत्रकारिता : दशा एवं दिशा –डॉ. अजय कुमार शुक्ल	68 – 74

12	**बाल साहित्य दशा एवं दिशा** –अमित कुमार	75 – 82
13	**बाल विकास में बाल साहित्य की भूमिका** –ईश्वरी ए.	83 – 89
14	**बालक के विकास में नैतिक मूल्यों की भूमिका** –डॉ. लक्ष्मण वड़खिया	90 – 94
15	**बालकों के विकास में बाल साहित्य का योगदान** –डॉ. रेणु कंसल	95 – 105
16	**बालक का विकास** –रक्षा निमामा	106 – 111
17	**बाल साहित्य में लोरी गीत** –ए. देविका	112 – 124
18	**वैदिक वाङ्मय : बाल राष्ट्र प्रेम एवं विद्याप्रेम के विशेष संदर्भ में** –डॉ. कविता जैन	125 – 132
19	**Contemporary Directions in Theorizing Childhood and Adulthood in Children's Literature: A Critical Overview** – Ravindra Singh	133 – 168

भूमिका

भारत में बाल साहित्य की परम्परा उस काल से है, जब शेष विश्व ने संभवतः ठीक से बातचीत करना भी न सीखा हो। बाल साहित्य का बीजारोपण कब, कैसे और कहाँ हुआ होगा? यह प्रश्न पर्याप्त विवाद का विषय है परन्तु वैदिक वाङ्मय में जो बाल कथाएँ प्राप्त होती है उनका स्तर इतना प्रौढ़ है कि उन्हें बाल साहित्य का प्रारंभिक रूप तो कदापि स्वीकार नही किया जा सकता है। यह संभव है कि वैदिक सभ्यता से पूर्व जो भी समाज रहा होगा उसी में कही इसका बीजवपन हुआ हो। पहले–पहल यह मौखिक और बाद में लिखित रूप में सामने आया होगा। इस बात में कोई शंका या मतभेद नही है कि बाल साहित्य का लिखित रूप वैदिक काल या उसके भी बाद के काल में आया होगा क्योंकि वैदिक साहित्य को वाङ्मय की संज्ञा दी जाती है जिसका तत्पर्य है 'वाणी से युक्त' इसी वैदिक साहित्य को 'श्रुति साहित्य' भी कहा गया है अर्थात वह साहित्य जिसे सुनकर ग्रहण किया जाता है। इस आधार पर यह अनुमान सहज ही, हो जाता है कि लेखन का आविष्कार वैदिक युग के अंत में या उत्तर वैदिक युग में हुआ होगा इससे पूर्व संपूर्ण साहित्य वाङ्मय या श्रुति पर ही आधारित रहा होगा अतः बाल साहित्य भी वाङ्मय या श्रुति आधारित ही रहा होगा। जैसा की ऊपर कहा गया वैदिक वाङ्मय में जो बाल साहित्य है वह बाल साहित्य का प्रारंभिक रूप तो कदापि नहीं हैं। अर्थात यह कहना अधिक समीचीन है कि बाल साहित्य का प्रारंभ वैदिक काल से पूर्व हो चुका था। वैदिक काल आते–आते वह पूर्ण विकसित हो चुका था। वैदिक वाङ्मय, पंचतंत्र हितोपदेश, कथासरित्सागर यादि कालजयी ग्रंथों में बाल साहित्य का अकूत खजाना छिपा हुआ है। इन कथाओं माध्यम से बालको को विभिन्न परिस्थितियों के लिए तैयार किया जाता था, ये बाल कथाएँ बालकों का मनोरंजन भी करती थी और उन्हें संस्कारित भी करती थी। बाल साहित्य की यह परम्परा वैदिक काल, उत्तर वैदिक काल और मध्यकाल से होते हुए आधुनिक काल तक पहुंचती है। आधुनिक काल आते–आते चीजें तेजी से बदली हैं, बालक किताबों से दूर होते जा रहें हैं। बाल साहित्य का स्थान पाठ्य पुस्तकें ले रही हैं। आज बालक के पास इतना समय नहीं है कि वह किस्से–कहानियाँ, बाल कविताएँ या अन्य किसी विधा का बाल साहित्य पढ़ सके।

आधुनिकता की अंधी दौड़ माता–पिता पर इस कदर हावी है कि वे बिना सोचे–विचारे ही अपने अबोध बालकों के साथ दौड़े जा रहे हैं। सुबह उठते ही बालकों के लिए कोई न कोई कोचिंग क्लास इंतजार कर रही होती है। वहाँ से छूटते ही स्कूल और फिर आने के बाद फिर से कोचिंग क्लास। इस दिनचर्या में यदि समय बच भी जाये तो वो मोबाइल की भेंट चढ़ जाता है। माता–पिता बच्चों को रोबोट बना देना चाहते है। वे उनमें अपने सपने, अपनी इच्छायें देखते है। वे स्वयं जो नहीं बन सके वो अपने बच्चों को बनाना चाहते है। ऐसे में पाठ्यक्रम पढ़ना ही मुश्किल हो जाता है तो बाल साहित्य पढ़ने की कल्पना कैसी की जा सकती है। आज एक कटु सत्य यह भी है कि बाल साहित्य को लेकर प्रति दिन लिखी जाने वाली सैंकड़ों पुस्तकें उनके लेखकों के पुस्तकालयों या लेखकों के मित्रों के पुस्तकालयों की शोभा बढ़ाती है, बच्चों तक उनकी पहुँच ही नहीं है। आज के बालकों के लिए ये पुस्तकें पढ़ना 'दूर की कौड़ी लाना' है। इन परिस्थितियों में बाल साहित्य कि 'दशा एवं दिशा' क्या हो सकती है इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। वर्ष 2001 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार संपूर्ण देश में एक करोड़ छब्बीस लाख छियासठ हजार तीन सौ सतहत्तर बाल मजदूर हैं। जब किसी देश में बाल मजदूरों का आँकड़ा इतना बड़ा हो और उनकी पीड़ा सुनने वाला कोई नही हो, उस स्थिति में बाल साहित्य की महत्ता, उपयोगिता, सार्थकता और औचित्य पर प्रश्न चिह्न लगना स्वाभाविक है, परन्तु परिवर्तन प्राकृतिक का कभी न परिवर्तित होने वाला नियम है, बाल साहित्य की दशा एवं दिशा में भी परिवर्तन आयेगा। एक दिन माता–पिता बाल साहित्य की आवश्यकता जरूर अनुभव करेंगे। एक दिन लेखकों की कल्पना पटुता और यथार्थ कौशल बालकों का पथ प्रदर्शन अवश्य करेंगे। इस संपादिक पुस्तक के माध्यम से बाल साहित्य के विविध आयामों तक पहुँचनें का एक सुअवसर प्राप्त हुआ है जिसके लिए सभी अध्याय लेखकों, मित्रों एवं बंधु–बान्धवियों का हृदय की अतल गहराइयों से आभार!

श्रावण कृष्ण द्वितीया 2080 वि. गुरुवार

सुरेन्द्र कुमार

डॉ. प्रीति दूबे